ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 94-95

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

वेश्यावृत्ति

नरेन्द्र त्रिपाठी

विभागाध्यक्ष– समाजशास्त्र विभाग, उदित नारायण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पड़रौना (उ0प्र0) भारत

Received- 07.11.2019, Revised- 10.11.2019, Accepted - 15.11.2019 E-mail: tripathinarendraballia@gmail.com

सारांश : *वेश्यावृत्ति सभी समाजों में मौजूद है। भारत में भी वेश्यावृत्ति का एक लम्बा और प्राचीन इतिहास है। वैदिक काल के दौरान 'गणिका' का अपना निर्धारित स्थान और कार्य था। एम0 लोंड्रेस का मानना है कि "The foundation of prostitution is hunger." मौर्य युग में नगर की सबसे सुन्दर युवती की मान्यता देकर उसे विशिष्ट व्यक्तियों की काम वासना को पूर्ण करने के लिए बाध्य किया जाता था, जिसे 'नगर वधू' कहा जाता था। जी0आर0 मदान का मानना है कि "In India the mistress mostly belongs to the class of professional singer or temple dancer who performed at the temple ceremonies in the olden days." मध्यकाल में देवी–देवताओं की सेवा करने के लिए कन्याओं को मंदिरों के लिए दान देना एक पुण्य कर्म रहा है, जिसे देवदासी प्रथा कहा गया है। रम्भा, उर्वशी, मेनका, तिलोत्मा अपनी कलात्मक उत्कृष्ठता के साथ नृत्य, संगीत आदि देवताओं के राजा इन्द्र को प्रसन्न करने के लिए अपने कौशल को प्रदर्शित करती थी।*

कुंजी शब्द – वेश्यावृत्ति, गणिका, नगरवधू, कलात्मक, उत्कृष्ठता, कौशल, वंशानुगत, अवमूल्यन, विवशता।

प्रायः हम देखते हैं कि स्त्रियों का व्यापार अब होटलों, नाचघरों, क्लबों, जुआघरों, शराब के अड्डों, ब्यूटी पार्लरों, पबों और नगर की आधुनिक कालोनियों में काफी देखने को मिलता है। कई स्त्रियॉं इसे व्यवसाय के रुप में या कोई अपने असुखी वैवाहिक जीवन के कारण अवैध सम्बन्ध बना लेती है। कहीं वंशानुगत, कहीं वासना पीड़ित, कहीं विघटित परिवार के कारण, कहीं छोटी बच्चियों का विवाह प्रौढ़ से करने के कारण, कहीं दोषपूर्ण संगति के कारण या अति निर्धनता के कारण, उच्च प्रस्थिति प्राप्त करने के लिए वेश्यावृत्ति अपना लेती है।

वेश्यावृत्ति महिलाओं की मानवीय प्रतिष्ठा का अवमूल्यन करती है और उसे समाज में ''पतित'' महिला के रुप में चित्रित करती है। महिलाओं की कामुकता का व्यापार महिला के अधीनीकरण से शुरु होता है। एक व्यक्ति के रुप में महिला का व्यक्तिव उसकी कामुकता के उद्देशीकरण द्वारा कमजोर होता है। शहरी क्षेत्रों के संदर्भ में जहॉं ग्रामीण क्षेत्रों से अकेले पुरुष का प्रवासन होता है, वहॉं वेश्यावृत्ति बहुत अधिक होती है। स्कॉट ने कहा है कि "In many cases, the mother is a prostitute herself, the father is a pimp and the send their daughters in the streets with the slightest compunction often themselves initiating her in sexual intercourse."

वेश्यावृत्ति मुख्य रुप से परिस्थितिजन्य विवशता है, जिससे वेश्याओं तथा वेश्यावृत्ति की समस्या खड़ी होती है। परिस्थितिजन्य विवशताओं के मुख्य दो करण हैं–

प्रथम– सामाजिक परित्याग की स्थिति में बहुत सी महिलाऍं हैं जिनका सामाजिक दृष्टि से परित्त्याग किया गया है जैसे– विधवाऍं, निराश्रय और परिरत्त्यक्त महिलाऍं, धोखे और ठगी की शिकार महिलाऍं जिन्हें विवाह का वचन दिया गया था अथवा विवाह किया गया था और जिस व्यक्ति पर विश्वास किया गया था, उसने दलाल या वेश्यालय के मालिकों को बेच दिया। सामाजिक परित्यक्तों में ऐसी महिलाऍं होती हैं जिन्हें उनके परिवार माता–पिता, पति ने बलात्कार हो जाने के पश्चात् उन्हें छोड़ दिया।

द्वितीय– बहुत सी ऐसी महिलाऍं जो कंगाली का जीवन–यापन कर रही हैं जो ग्रामीण क्षेत्रों और निर्धन परिवारों से अवयस्क लड़कियॉं और महिलाऍं वेश्यावृत्ति के लिए विवश की जाती हैं, जिससे उनके रहन–सहन और कामकाज की दशाऍं सोचनीय हैं।

वेश्यावृत्ति बहुत गंभीर और जटिल समस्या है जिसे सरलता से स्पष्ट नहीं किया जा सकता है। कोई भी व्यक्ति इसे खिलवाड़ के रुप में नहीं अपनाता है क्योंकि इसमें कुछ ऐसा नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने शरीर को क्षत–विक्षत और दूषित करने देना, पूरे वर्ष, दिन में कई बार, साल दर साल यह होतें रहने देना जब तक कि शरीर बूढ़ा न हो जाए। क्या यह तुच्छ मामला नहीं है। यह अपमानजनक, घोर व्यथाकारी है, किसी को शारीरिक और मानसिक रुप से इस सीमा तक तोड़ दिया जाता है कि उसके लिए अपना नया जीवन शुरु करना कठिन ही नहीं अपितु दीर्घकालीन भयंकर मानसिक आघात और कठिन हो जाता है। मिस कमला रॉव और डॉ0 पुनेकर ने मुम्बई में एक सर्वेक्षण में कहा कि 71 : महिलाऍं गरीबी के कारण इस व्यवसाय में लगी है।

भारत में ''सामाजिक तथा नैतिक स्वास्थ्य से

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

सम्बन्धित सलाहकार समिति'' का भी यही मत है कि सम्भोग का धन से विनिमय, यौनिक स्वच्छन्दता तथा भावनात्मक उदासीननता वेश्यावृत्ति के तीन प्रमुख आधार है।

वेश्यावृत्ति के परिणाम स्वरुप यौन रोग, एड्स, अपराधों में वृद्धि, नैतिक पतन, वैयक्तिक विघटन, पारिवारिक विघटन आदि अनेकों समस्याओं से एक–दो होना पड़ता है।

सरकार द्वारा स्त्रियों तथा कन्याओं का अनैतिक व्यापार निरोधक अधिनियम 1956 पारित होने के पश्चात् भी वेश्यावृत्ति की समस्या पहले से अत्यधिक गम्भीर हो गयी है। पुनः 1986 में वेश्यावृत्ति के अवैध कार्य को रोकने के लिए पहले वाला एस0आई0टी0ए0 अधिनियम संशोधित किया गया था, फिर भी नये व्यक्तियों में अनैतिक व्यापार निवारण अधिनियम का भी वैसा ही लक्ष्य, उद्देश्य तक और आधार वाक्य है। परन्तु आई0टी0पी0पी0ए0 वेश्याओं को दण्ड देने सम्बन्धी अनुच्छेदों को रखा गया है। साथ ही ग्राहक को अपराधी नहीं बताया गया है। एस0आई0टी0ए0 की असफलता के निम्नलिखित कारण थे–

1– वेश्याओं का राजनीतिक सम्बन्ध।
2– वेश्याओं के दंडकरण के साथ चालबाजों द्वारा हिरासत से बचाव।
3– अधिनियम में सम्मिलित अनुशास्तियों का पुलिस द्वारा वेश्याओं से रिश्वत और जुर्माना ऐंठने के लिए प्रयोग किया जाना।
4– साक्ष्य प्रस्तुत करने में समस्याएँ।
5– मजिस्ट्रेटों की कामुक अभिवृत्ति।
6– सुधारगृहों की कमी, मूलभूत सुविधाओं की कमी, स्टाफ की अल्प योग्यता और पुनर्वास के प्रति सुधरात्मक उपायों की न्यूनतम गुणवत्ता, ये सभी समस्याएँ अभी भी विद्यमान हैं।

अन्ततः हम यह कह सकते हैं कि महिलाओं में गुणात्मक सुधार लाने से पूर्व हम पुरुषों का भी यह दायित्व बनता है कि हम अपने यौन–इच्छा की पूर्ति परिवार के अन्तर्गत रहते हुए करें साथ ही हमें अपने बच्चियों की निगरानी करनी होगी, अच्छे–बुरे में विभेद बताना होगा साथ ही सरकार को यह प्रयत्न करना चाहिए कि निर्धन परिवार के बच्चों की अत्यधिक मदद करके उन्हें स्वावलम्बी बनाया जाये ताकि वे भौतिकवादी वस्तुओं को आसानी से खरीद सकें जिससे चका–चौंध भरी दुनियॉ की तरफ वे लालायित न हो सके। साथ ही साथ विद्यालयों में यौन शिक्षा की व्यवस्था भी हो ताकि इसके दुष्परिणामों से नवयुवतियॉ व नवयुवक अवगत हो सकें। साथ ही जेल, संवासिनी गृह, बालगृह आदि की निगरानी सी0सी0टी0वी0 के माध्यम से आनलाइन मानिटरिंग हो तब जाके हम इनकों राष्ट्र की मुख्यधारा में वापस ला सकेगें।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. M.Londres as quotey by CB Mamoria,P-761.
2. G.R. Scott as quoted by R.K. Sharma in his "Urban Sociology"(2007)P.-221.
3. Source of Statisticcs: C.B. Mamoria,P-762.
4. Madan:G.R;. P-206.
5. Report of A dvisory Committee on Social and Moral Hygiene(1954);P-30.

*****